ओम् शान्ति 24-7-15 मधुबन

दीदी मनमोहिनी जी की विशेषतायें

विश्व कल्याणकारी प्यारे बापदादा के साथ विश्व परिवर्तन के महान कार्य में जो विशेष आत्मायें निमित्त बनी, उसमें दीदी मनमोहिनी जी का नाम अविस्मरणीय है। दीदी जी का लौकिक नाम गोपी था, आप एक बहुत नामीग्रामी धनाड्य सिन्धी परिवार से थी। यज्ञ की स्थापना के समय अनेक बन्धनों को तोड़ते हुए अपनी लौकिक माँ क्वीन मदर और लौकिक बहन शील के साथ किसी की परवाह किये बिना झाटकू रूप से समर्पित हो गई। आप में अनेकानेक विशेषतायें थी, आपका बाबा से अटूट प्यार था, हर पल, हर बोल में बाबा बाबा ही निकलता। आप दिलवाला की सच्ची दिलरूबा थी। दीदी जी को अव्यक्त नाम मिला - ''मनमोहिनी'' दीदी के सानिध्य में जो भी आता, दीदी उसका मन ऐसा मोह लेती जो वह बाबा का पक्का वारिस बन जाता।

हिन्दुस्तान, पाकिस्तान बटवारे के पश्चात 1950 में जब ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय का स्थान चुनना था तब सर्वप्रथम ब्रह्मा बाबा ने दीदी को ही भारत में भेजा और दीदी ने ही अरावली की चोटी आबू पर्वत को पसन्द किया और मई 1950 में पूरी संस्था कराची से स्थानांतरित होकर भारत में आबू आ गई। यहाँ से 1952 में जब ईश्वरीय सेवायें प्रारम्भ हुई, उस समय आपने पहले-पहले दिल्ली, इलाहाबाद आदि स्थानों पर अपने त्याग तपस्या के आधार पर कई सेवाकेन्द्र खोले। 1965 में मातेश्वरी जगदम्बा माँ के अव्यक्त होने के पश्चात फिर से बापदादा के साथ मधुबन में रहकर यज्ञ की इंटरनल कारोबार को, पूरे प्रशासन को सम्भालने के निमित्त बनी और 1969 में ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के पश्चात दीदी और दादी की जोड़ी ने पूरे यज्ञ को सम्भाला और दोनों ने मिलकर मात-पिता के रूप में देश विदेश के सर्व ब्राह्मण परिवार की नि:स्वार्थ पालना की और पूरे विश्व में सेवाओं का खूब विस्तार किया। दीदी दादी की जोड़ी को सभी कहते थे - शरीर दो हैं, आत्मा एक है। ऐसी एकता का प्रूफ देकर, एक दो की राय को सम्मान देते हुए यज्ञ को निर्विघ्न बनाया। आज दीदी जी के 32 वें पुण्य स्मृति दिवस पर उनकी अनेकानेक विशेषतायें नज़रों के सामने घूम रही हैं, उनकी कुछ विशेषतायें यहाँ लिख रहे हैं, जिन्हें अपने जीवन में अनुसरण करके हम भी अपने पूर्वजों के समान बनकर बापदादा का नाम रोशन कर सकते हैं।

दीदी जी से मुझे व्यक्तिगत रूप में 11 वर्ष तक बहुत स्नेह की पालना मिली है। साथ रहने का सौभाग्य मिला है। दीदी ने माँ और टीचर रूप से मुझे विशेष पालना देकर इतना आगे बढ़ाया, इसलिए उनके प्रति अपने दिल के स्नेह की सच्ची श्रंधाजलि अर्पित करते हुए उनकी 25 विशेषतायें आप सबके पास भेज रहे हैं। आप अपनी क्लासेज़ में इन्हें सुनाकर दीदी जी के जीवन चरित्र से सबको अवगत कराना जी। दीदी जी आज से 32 वर्ष पूर्व 28 जुलाई 1983 को, अपना पुराना शरीर छोड़ एडवांस पार्टी की सेवा में चली गई। सभी स्थानों पर दीदी जी के निमित्त भोग लगता ही है। मधुबन में 23 तारीख सतगुरूवार के दिन दीदी के निमित्त विशेष भोग लगाया गया क्योंकि इस समय सभी तरफ के मुख्य भाईयों की भट्ठी तथा 2 से 20 वर्ष तक की टीचर्स बहिनें उपस्थित थी। आप भी अगले सतगुरूवार को या दीदी के दिन विशेष भोग लगाना जी। भोग के पश्चात दीदी जी की यह विशेषतायें अपने-अपने क्लास में सुना सकती हैं। अच्छा - सर्व को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. राजू

मनमोहिनी दीदी की विशेषतायें

1. सम्पूर्ण समर्पित - दीदी जी एक ऊंचे धनाड्य परिवार की होते हुए भी धन-सम्पदा, कलियुगी लोक-लाज की परवाह किये बिना एक धक से सेकण्ड में नष्टोमोहा बन समर्पित हो गई।
2. सच्ची मस्तानी गोपिका - आपका बाबा से इतना अटूट स्नेह था, जो नज़रों में एक ही बाबा बसता। दीदी के दिल में एक बाबा के सिवाए कोई भी नहीं समाया। बाबा के प्यार में आप कभी डांस करती तो सेमी ट्रांस में जाकर लवलीन (मगन) हो जाती।
3. सच्ची पतिव्रता, सतीव्रता, पिताव्रता - सदा तुम्हीं संग खाऊं, तुम्हीं संग बैठूं, तुम्हीं से रास रचाऊं... ऐसी एकव्रता होकर, सदा एक के ही गुण गाते आज्ञाकारी, वफादार, आनेस्ट बनकर रही। कभी किसी वस्तु व्यक्ति की तरफ आकर्षित नहीं हुई।
4. नम्बरवन गाडली स्टूडेन्ट - आप लौकिक में स्कूल नहीं गई, लेकिन भगवान का नम्बरवन स्टूडेन्ट बनकर आप सबकी टीचर बन गई। आप क्लास में कभी भी बिना कापी पेन के नहीं गई। आपको बाबा के महावाक्यों से (मुरली से) अति प्यार था, बहुत ध्यान से सबसे आगे बैठकर मुरली सुनती और उनसे बहुत अच्छे गुह्य प्रश्न निकालती और सबको उससे रिफ्रेश करती।
5. भाषण नहीं किये, सबको भासना दी - आपने कभी बड़ी स्टेज पर जाकर प्रवचन नहीं दिये, लेकिन एक एक को जिगरी पालना देकर स्नेह की भासना दी। सभी का प्यार एक बाबा से जुड़ाया। इर एक को इतना नि:स्वार्थ प्यार दिया जो और किसी में उसकी बुद्धि न जाए।
6. परखने और निर्णय शक्ति में नम्बरवन: दीदी की बुद्धि इतनी स्वच्छ स्पष्ट थी, जो सामने कैसी भी आत्मा आये उसे फौरन परख लेती और उसकी हर आवश्यकता को पूरा कर उन्हें बाबा का बना देती। दीदी के बात करने का टैक्ट ऐसा था, जो बड़े-बड़े वी.आई पीज भी दीदी जी से मिलने के बाद रेग्युलर स्टूडेन्ट बन जाते।
7. दीदी की दृष्टि में रूहानी जादू: दीदी से जो भी दृष्टि लेते, उन्हें वैकुण्ठ की दुनिया का साक्षात्कार हो जाता। आपके योग की ऐसी स्थिति थी, आत्मिक स्थिति का ऐसा अभ्यास था, जो नज़र से निहाल कर हर आत्मा को तृप्त कर देती।
8. जितना गम्भीर, उतना रमणीक: दीदी इतनी अन्तर्मुखी रहती, जो उनके मुख से कभी व्यर्थ बोल नहीं निकलते। कभी किसी का परचिंतन, परदर्शन नहीं करती। उनके जीवन में गम्भीरता के साथ रमणीकता का बैलेन्स था। वे सभी से अलौकिक चिटचैट करके खूब रिफ्रेश कर देती। उनके साथ बहुत रमणीकता से खेलपाल करती।
9. शिक्षा देने की अलौकिक विधि: दीदी कभी सुनी सुनाई एक तरफ की बातों के आधार पर निर्णय नहीं लेती। अगर कोई किसी की कम्पलेन करता, तो उसी समय उनके सामने उसे भी बुलाकर फैंसला करती और जिसे जो शिक्षा देनी होती उसे स्पष्ट शब्दों में दे देती।
10. सखी स्नेह में नम्बरवन: दीदी सभी को सखी स्नेह देकर बाबा का बना देती। उनसे सखी स्नेह में ज्ञान की गहरी-गहरी रूहरिहान करती। दीदी कहती सहेली नहीं बनाना, सखी बनाना। सहेलियां आपस में परचिंतन करेंगी, सखियां ज्ञान की चिटचैट करेंगी।
11. सदा निर्भय, निडर और निश्चिंत - दीदी कभी किसी बात में भयभीत नहीं होती। बाबा की शक्तियों में उनका अटूट विश्वास था। निश्चय अटल था इसलिए सदा निर्भय रही। यज्ञ के सामने कैसी भी परिस्थितियां आई, उसमें सदा निश्चिंत रही, कभी क्यों क्या का प्रश्न नहीं किया, सदा प्रसन्नचित रही। कभी उनके चेहरे पर चिंता

के चिन्ह दिखाई नहीं दिये।

12. सच्चाई सफाई की प्रतिमूर्ति – दीदी को सच्चाई अति प्रिय थी, अगर कोई अपनी गलतियां सच्चे दिल से महसूस कर लेता, तो उसे क्षमा कर देती और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती। आप अन्दर बाहर स्वच्छ साफ थी। आपकी कथनी और करनी सदा समान रही। जो दूसरों को कहती वह पहले खुद करके दिखाती।

13. बालक और मालिक का बैलेन्स – दीदी यज्ञ की मालिक थी, लेकिन उनके जीवन में बालक और मालिकपन का बैलेन्स देखा, जो यथार्थ बात होती वह मालिक बन सबके सामने रखती, लेकिन अगर सबकी एकमत नहीं होती तो बालक बन उसे भूल जाती। कभी बहस या डिबेट में समय नहीं गंवाती। दीदी बालक बन बाबा की अंगुली पकड़कर यज्ञ की हर डिपार्टमेंट का चक्कर लगाती। बाबा उन्हें कहते अभी आपने बाबा की अंगुली पकड़ी है, भविष्य में श्रीकृष्ण आपकी अंगुली पकड़कर चलेगा। ऐसा नशा है ना!

14. यज्ञ रक्षक, यज्ञ सेवाधारी। आपके रग-रग में यज्ञ के प्रति अटूट प्यार था, यज्ञ को किसी भी प्रकार की आंच न आये, उसके लिए आप बहुत ध्यान रखती और हर एक को यज्ञ की अमानत को सम्भालने की, नि:स्वार्थ सेवा करने की प्रेरणा देती।

15. सफल करने और कराने में नम्बरवन। दीदी ने अनेकों का तन-मन-धन सफल कराया। यज्ञ को कौन सम्भाल सकते हैं, दीदी उनकी जीवन कहानी को सुनकर, परखकर उसे समर्पित कराया और उनके दिल में यज्ञ के प्रति भावना भरी।

16. लव और लॉ का बैलेन्स – दीदी अलौकिक माँ के रूप में सबको स्नेह भी देती, हर प्रकार से यज्ञ वत्सों को खाने पीने, पहनने, रहने की सुविधा देती, उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखती, लेकिन कभी कोई ईश्वरीय नियम एवं मर्यादाओं में अलबेला होता, आलस्य करता या किसी मर्यादा को तोड़ता तो उसे फौरन सज़ा देती या डायरेक्ट बुलाकर इशारा देती।

17. मर्यादा पुरुषोत्तम स्थिति - दीदी स्वयं को ईश्वरीय मर्यादाओं का कंगन बांधकर रखती और सभी का उस पर ध्यान खिंचवाती। ब्राह्मण सो देवता बनने वाली आत्माओं को विशेष संगदोष, अन्नदोष न लग जाए, दीदी पहली शिक्षा यही देती कि संग से अपनी सम्भाल करना। पवित्रता के व्रत को कभी खण्डित होने नहीं देना। ब्रह्मचर्य के साथ ब्रह्माचारी बनकर रहना।

18. आलराउन्ड एक्यूरेट और अलर्ट: दीदी का ध्यान यज्ञ की आलराउण्ड सेवा पर रहता, वे मुरली क्लास के पश्चात स्वयं भण्डारे में चक्कर लगाती और कुछ समय सबके साथ बैठकर सब्जी काटने में मदद करती। एक्यूरेसी उनके जीवन में कूट कूटकर बाबा ने भरी थी, वे बाबा के अव्यक्त होने के बाद सभी पत्रों का जवाब खुद बैठकर लिखती या लिखवाती। कभी दीदी ने कोई भी सेवा पैन्डिग नहीं रखी। जो सेवा जब जरूरी है उसे उसी समय अलर्ट बनकर की और कराई।

19. स्वमानधारी और सम्मानदाता - स्वयं सर्वशक्तिवान बाबा हमारा साथी है, दीदी सदा इसी स्वमान में रहती और सबको दिल से सम्मान देती। अगर कोई अपनी सेवा समय प्रमाण सच्चाई से करता तो उसे इतना ही सम्मान देती, खातिरी करती, उन्हें विशेष सौगात दी। दीदी के दिल में यज्ञ के सच्चे सेवाधारियों प्रति अति रिस्पेक्ट था।

20. योगी और कर्मयोगी जीवन का आदर्श: दीदी स्वयं योग के गहरे अनुभवों में सदा रहती और अमृतवेले विशेष खुद सबको संगठित रूप में योग की ड्रिल कराती, साथ-साथ कर्म करते कैसे योग में रहना है, उस पर भी

ध्यान खिंचवाती। अव्यक्त रूप से यज्ञ की कारोबार निर्विघ्न रूप से चलाने के लिए दीदी बीच-बीच में विशेष मौन वा अव्यक्त भाषा द्वारा सबको साइलेन्स की शक्ति बढ़ाने की प्रेरणा देती।

21. बेहद की दृष्टि और बेहद का दृष्टिकोण – दीदी कभी तेरे मेरे की हदों में नहीं आई, यह ज़ोन अथवा यह एरिया इसकी है या उसकी है.. इस प्रकार की भाषा दीदी के मुख से कभी नहीं सुनी। वे सदा बेहद में रही, बेहद की सोच वा समझ से सबकी पालना की। मैं और मेरेपन की भाषा से मुक्त रही।

22. निमित्त और निर्माण – दीदी यज्ञ की अनेक जवाबदारियों को सम्भालते हुए सदा करावनहार बाबा है, वही करता कराता है, इसी निश्चय से स्वयं को निमित्त बनाए सदा निर्माण होकर रही। दीदी के बोल में कभी अभिमान का अंश नहीं दिखाई दिया।

23. फ्राकदिल के साथ एकानामी का अवतार: दीदी आने वाले मेहमानों की भरपूर खातिरी करती, कभी-कभी ऐसे सुहेज रचाती जिसमें 36 प्रकार वा 56 प्रकार के भोजन का ब्रह्माभोजन कराती, एक बार तो दीदी ने 108 प्रकार का भोग बनवाया और सभी के साथ मिलकर खाया और खिलाया लेकिन साथ-साथ अनासक्त वृत्तियों पर भी ध्यान खिंचवाया। दीदी यज्ञ की एकॉनामी का बहुत ध्यान रखती, दीदी कहती गरीब-गरीब बच्चे, भोली-भोली मातायें अपनी मेहनत की कमाई यज्ञ में भेजती हैं, इसलिए कोई भी व्यर्थ खर्च नहीं करना है। अपने प्रति कम से कम खर्च हो, इस बात पर ध्यान रखना है। साधन सुविधायें सब सेवा के लिए हैं, अपने प्रति नहीं।

24. अपकारी पर भी उपकार की भावना: कभी कोई यज्ञ की वा बड़ों की इनसल्ट करता, कोई उल्टा सुल्टा बोलता तो भी दीदी कहती, बाबा ने सब पर उपकार किया है, इसका दोष नहीं है। इसलिए कभी भी बदला लेने का ख्याल नहीं रखना। दूसरे को बदलने के बजाए खुद को बदल लो, इसमें ही भलाई है।

25. उपराम और साक्षी दृष्टा– दीदी अव्यक्त होने के कुछ महीने पहले से ही हर कारोबार से उपराम होती गई। कभी कोई बात दीदी को सुनाते तो दीदी कहती, छोड़ो इन बातों को अब तो घर चलना है। दीदी के इस वाक्य के आधार पर ही एक गीत बना - अब घर चलना है...। इसी एक स्मृति से दीदी साक्षी दृष्टा बनती गई, कार्य व्यवहार से भी उपराम होते, 28 जुलाई 1983 में इस भौतिक देह से अलग हो अव्यक्त वतनवासी बन बेहद सेवा में चली गई। अच्छा - ओम् शान्ति।